श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

मास्टर ऑफ जैनिज्म् प्रथम वर्ष-१

जून - २०२५

प्रश्न - पत्र

गुणांक - ५०

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है । ५. गलत एनरोलमेन्ट नंबर तथा नहीं समझे ऐसे एनरोलमेन्ट नंबर के १० अंक कम कर लिये जायेंगे । ६. समय पर ता. २५ ओक्टोबर तक पेपर नही मिले तो दूसरे १० अंक कम किये जायेंगे। ७. निबंध के मार्क्स ग्रेड पद्धति से दिये जायेंगे। ८. जवाब पत्र, निबंध में नाम, एनरोलमेन्ट नंबर, वर्ष और सत्र लिखना जरुरी है । ९. जवाब तत्वार्थ सूत्र की प्रस्तावना व प्रथम दो अध्याय (पृष्ठ १ से ८१) में से ही लिखना है ।

प्रश्न नं. १ योग्य विकल्प ढूंढकर रिक्त स्थान की पूर्ति करो — २५

१. सामान्य तत्व को ही दृष्टि में रखकर विचार करना यह...................... नय है ।
२. आहारक शरीर.................... के द्वारा ही निर्मित किया जा सकता है ।
३. अनाकार उपयोग को दर्शन या...................... कहते हैं ।
४. योग्य क्षयोपशम के बिना कोई भी .... नहीं हो सकता ।
५. .... ग्यारह अंग के धारक थे ।
६. पहले अनुभव की हुई और वर्तमान में अनुभव की जाने वाली वस्तु की एकता का तालमेल............... है ।
७. कभी कभी.................... का प्रयोग लब्धि से किया जाता है ।
८. उपयोग ही.................... होने से अपना तथा अन्य पर्यायों का ज्ञान कराता है ।
९. जैन परम्परा अपने.................... के वक्तव्य को अक्षरशः स्वीकार कर लेती है ।
१०. कोई भी .... वस्तु के सम्पूर्ण पर्यायो को ग्रहण नहीं कर सकती ।
११. वक्रगति वाले जीव के प्रथम वक्र स्थान से ही नवीन आयु गति और...............का यथा सम्भव उदय हो जाता है ।
१२. जीवन का जो भाग तत्वानुभव को पचाने में ही पूर्णता समझता है वह............... है ।
१३. सचेल और अचेल दोनों प्रकार के मुनियों का वर्णन .... में है ।
१४. .... में प्रत्यक्ष और परोक्ष का लक्षण भिन्न प्रकार से किया गया है ।
१५. स्थावर तो सभी.................... ही होते हैं ।
१६. भाववेद एक.................... है जो मोहनीय कर्म के उदय का फल है ।
१७. जो वस्तु असली वस्तु की प्रतिकृति हो वह................. है ।
१८. सर्वांश में स्पर्श करने का प्रयत्न करने वाला विचार.................. है ।
१९. लब्धि एक प्रकार की .... शक्ति है जो कुछ ही गर्भज मनुष्यो और तिर्यंचो में सम्भव है ।
२०. कान भी .... पुद्गल के ध्वनि रुप पर्याय को ही ग्रहण करता है ।
२१. इतिहास तो यही कहता है कि जैनाचार्यो में उमास्वाति ही प्रथम .... हैं ।
२२. सम्यक् चारित्र का यह नियम है कि जब वह प्राप्त होता है तब उसके पूर्ववर्ती.............. आदि दो साधन अवश्य होते हैं ।
२३. जिस आयु का भोगकाल बन्धकालिन स्थिति-मर्यादा से कम हो वह.................... आयु है ।
२४. .... के समय कार्मणयोग से चंचल जीव भी कर्म वर्गणाओं को ग्रहण करता है ।
२५. सम्यक्त्व और चारित्र ये दो ही पर्याय............. भाववाले हैं ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो — २५

१. जगत में ऐसा कौनसा तत्व है जो मोक्षमार्ग के उपदेश का अधिकारी नहीं है ?
२. एक साथ संपूर्ण अंशो का विचार करने में कौन असमर्थ है ?
३. कर्म का सम्बन्ध बिलकुल छूट जाने पर आत्मा में क्या प्रकट होती है ?
४. आयु के नियत स्थिति के भोग को क्या कहते हैं ?
५. शीघ्र जानने वाले चारों [illegible] क्या कहलाते है ?

७. व्यंजनावग्रह का चरम पुष्ट अंश क्या है ?
८. जीव के कौन से भाव कर्म के उदय, उपशम, क्षय, तथा क्षयोपशम से उत्पन्न नहीं होते ?
९. कौन से जीव में समभाव और आत्म विवेक होता है ?
१०. जिसमें तीन बार सरल रेखा का भंग हो वह कौनसी गति कहलाती है ?
११. साधक अवस्था की अपेक्षा से साध्य साधन भाव किसका कहा गया है ।
१२. जो अपनी विशाल ज्ञानराशि का भी उपयोग सांसारिक वासना के पोषण में करता है उसके ज्ञान को क्या कहा जाता है ।
१३. कौन सा शरीर सुन्दर, निरवद्य और अव्याघाती होता है ?
१४. लब्धीन्द्रिय कौन से कर्म के क्षयोपशय का आत्मिक परिणाम है ?
१५. एक ही अर्थ में व्युत्पति के अनुसार अर्थभेद मानने वाला विचार क्या है ?
१६. किसका विशिष्ट संबंध द्रव्य बंध है ?
१७. उत्पति स्थान में स्थित औदारिक पुद्गलों को पहले पहल शरीर रुप में परिणत करना क्या है ?
१८. तेजः कायिक और वायुकायिक किस प्रकार के त्रस कहलाते हैं ?
१९. विषय कम होने पर भी अवधि से विशुद्धत्तर ज्ञान किसे माना जाता है ?
२०. दो समय तक जीव कब अनाहारक माने गये हैं ?
२१. भावी वस्तु की विचारणा वह क्या है ?
२२. जो अवधिज्ञान जन्मान्तर होने पर भी आत्मा में कायम रहता है उसे क्या कहते हैं ?
२३. कैसे विचार व्यवहार नय की कोटि में आते हैं ?
२४. अनन्तानुबंधी आदि अष्टविध कषाय के क्षयोपशम से किसका आविर्भाव होता है ?
२५. बिना जन्मान्तर के उसी शरीर से मोक्ष पानेवाले क्या कहलाते हैं ?

प्रश्न नं. ३ विविध ग्रंथो की सहायता से तुम्हारे शब्दों में १५ से १७ पन्नो का महानिबंध लिखो (कोई भी एक)

१. नये और निक्षेप - (नये याने क्या ? अनेकांत वाद नये के प्रकार दृष्टांतो के साथ, निक्षेप याने क्या ? निक्षेप के प्रकार आराधनामें महत्व, प्रभुकी वाणी में नय निक्षेप, नय निक्षेपसे जिन धर्म का महत्व)
२. जीव की संसार यात्रा - (जीव याने क्या ? जीव के प्रकार, चार गति, जन्म के प्रकार, शरीर के प्रकार, जीव का लक्षण, इंद्रिया, संसार यात्रा में सुख, दुःख, रोग, शोक वगैरे विविध योनीया, मरण, परलोक विग्रह गति)
३. जीवकी शिव यात्रा - (जीव याने क्या ? मोक्ष याने क्या ? मोक्ष मार्ग, सम्यक् दर्शन प्रकार, प्राप्ती मार्ग, नव तत्व श्रध्दा, सम्यक्ज्ञान के प्रकार, ज्ञान-अज्ञान, स. चारित्र, ज्ञानका फल, विरति महाव्रत, व्रत, चारित्र के प्रकार, चारित्र से संवर, तपसे निर्जरा, मोक्ष))

निबंध के लिये नीचे मुजब ग्रेडिंग रहेगी

१) ४० मार्क्स के उपर A+ २) ३५ मार्क्स के उपर A ३) ३० मार्क्स के उपर B+ ४) २५ मार्क्स के उपर B
५) २० मार्क्स से कम C

उत्तर पत्र लिखे पते पर भेजिए : सौ. काश्मीरा विनोद लोडाया